वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 228
ISBN-978-93-82071-64-8

भगवान पुष्पदंतनाथ जन्मभूमि
काकंदी तीर्थ परिचय एवं पूजा

–संकलनकर्त्री–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के
61वें त्यागदिवस के अवसर पर घोषित चारित्रवर्धनोत्सव वर्ष 2012-2013
के अन्तर्गत पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के
56वें जन्मदिवस के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र., फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

द्वितीय संस्करण	वीर नि. सं. 2539	मूल्य
1100 प्रतियाँ	ज्येष्ठ कृ. अमावस, 8 जून 2013	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण, सन् 2005-प्रतियाँ 1100

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

वर्तमान परिवेश में भौतिकता की चकाचौंध में तल्लीन व्यक्ति को अपने आवश्यक कर्त्तव्यों का भी ध्यान नहीं रह जाता है, ऐसे दिशाभ्रमित जीवों को उनके कर्त्तव्य का भान कराने के लिए आचार्यों ने समय-समय पर अनेक वृहद् एवं लघुकाय ग्रंथों की रचना करके महान कार्य किया है।

वर्तमान शताब्दी में लेखन की अजस्र धारा प्रवाहित करने वाली जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने अनेक वृहत् एवं लघु ग्रंथों के साथ-साथ पूजा-विधानों में अपना कीर्तिमान स्थापित करते हुए जैन समाज पर अनन्य उपकार किया है, उसी पथ का अनुसरण करने वाली उनकी शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी की लेखनी से भी अनेक छोटी-बड़ी पुस्तकें तथा पूजा-विधान, चालीसा, नाटिका आदि सारभूत पुस्तकों की रचना हुई है, जो वर्तमान पीढ़ी के युवावर्ग में नूतन चेतना जागृत करती हैं और आगम का ज्ञान कराती हुई सभी को नई दिशा प्रदान करती हैं, उसी श्रृँखला में उन्होंने ''काकन्दी तीर्थ परिचय एवं पूजा'' नामक पुस्तक का संकलन किया है जो कि एक समयोचित कृति है और पुष्पदंतनाथ भगवान की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ के महत्त्व को साररूप में बताने वाली यह कृति है। ऐसी सारभूत कृति के द्वारा आप काकन्दी तीर्थ का परिचय, पुष्पदंतनाथ भगवान का परिचय एवं तीर्थ की पूजन के साथ-साथ भगवान पुष्पदंतनाथ की पूजन तथा शुक्रग्रह अरिष्ट निवारक भगवान की भी पूजन है। पुनः तीर्थ की आरती, भजन आदि हैं। इन सभी को पढ़कर आप अपने हृदय में देव-शास्त्र-गुरु के प्रति भक्ति रखते हुए तीर्थंकर भगवान एवं उनकी जन्मभूमि की पूजा-अर्चना करके अपने मानव जीवन को सार्थक करने में सफल हों, यही मंगल भावना है।

प्रस्तावना

-पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

जैनागम में दो प्रकार के तीर्थ माने गए हैं–1. चेतन तीर्थ 2. अचेतन तीर्थ। चेतन तीर्थ के अन्तर्गत हमारे पंचपरमेष्ठी भगवन्त अर्थात् अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु आते हैं तथा अचेतन तीर्थ तीर्थंकर भगवन्तों के गर्भ, जन्म, तप आदि पंचकल्याणकों से पावन भूमियाँ हैं जो उनके समागम से तीर्थ संज्ञा को प्राप्त हुई हैं।

लोकव्यवहार में एक सूक्ति अत्यन्त प्रचलित है-''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'' अर्थात् माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं, महान हैं। यह सूक्ति तो प्रत्येक मनुष्य के लिए लागू होती है फिर जिस भूमि पर तीर्थंकर जैसे महापुरुषों ने जन्म लिया हो उसकी श्रेष्ठता-उनकी महानता का क्या वर्णन करना? आचार्य कहते हैं–

जिस प्रकार राजहंस से मानसरोवर शोभा को प्राप्त करता है उसी प्रकार तीर्थंकर महापुरुषों के जन्म लेने से वह नगरियाँ परम पावन, वन्दनीय, पूज्यनीय हो जाती हैं।

यूँ तो अनन्तानन्त तीर्थंकरों की जन्मभूमि अयोध्या नगरी कहलाती है जिसे जैनागम में शाश्वत तीर्थ संज्ञा प्राप्त है परन्तु हुण्डावसर्पिणी कालदोषवश वर्तमानकालीन चौबीसी में मात्र 5 तीर्थंकरों ने अयोध्या नगरी में जन्म लिया और शेष तीर्थंकर अलग-अलग स्थानों पर जन्में, जिनमें से जैनशासन के नवमें तीर्थंकर भगवान पुष्पदंतनाथ ने उत्तरप्रदेश की काकन्दी नगरी में जन्म लेकर उसे पावन किया था। महानुभावों! जहाँ कभी स्वर्णखचित महल में माता के आंगन में रत्नों की वर्षा हुई होगी, जहाँ स्वर्ग से देवों ने अपार समूह के साथ आकर प्रभु का जन्मोत्सव मनाया होगा, जहाँ प्रभु पालने में झूलकर समस्त कुटुम्बी व प्रजाजनों के आकर्षण का केन्द्र बने होंगे, जहाँ वे देव बालकों के संग खेले होंगे, जहाँ वैराग्य को प्राप्त होने पर लौकान्तिक देवों ने स्वर्ग से आकर उनकी स्तुति की होगी। आज वह धरा कालदोष व जैन समाज की सुप्तावश वीरान व उपेक्षित है परन्तु हमारे महान पुण्योदय से तीर्थंकरों की अनेकों जन्मभूमियों को विकसित स्वरूप प्रदान करने वाली पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से शीघ्र ही वह काकन्दी तीर्थ भी अपने विकसित स्वरूप को प्राप्त कर करोड़ों वर्ष पूर्व के इतिहास के साकार स्वरूप में विश्व के मानसपटल पर छाने वाला है।

चूँकि सत्साहित्य वह शिक्षक हैं जो हमें सही राह दिखाते हैं और उनके द्वारा जिनेन्द्र भक्ति कर असंख्य कर्मों की निर्जरा होती है अतः उसी काकन्दी तीर्थ के गौरवमयीइतिहास को साररूप में जनमानस के सम्मुख लाने के उद्देश्य से पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी की सुयोग्य शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा ''काकन्दी तीर्थ परिचय एवं पूजा'' पुस्तक का संकलन किया गया है, जिसमें तीर्थ परिचय के साथ-साथ काकन्दी तीर्थ एवंपुष्पदंतनाथ भगवान की पूजा है, जिसके माध्यम से आप सब उस पवित्र तीर्थ एवं वहाँ जन्में भगवान को नमन कर असंख्य कर्मों की निर्जरा करते हुए वहाँ के इतिहास से परिचित होकर अजन्मा बनने की भावना को वृद्धिंगत करें, यही मंगल भावना है।

(सन् 2010 में लिखित)

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम– क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा– भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ परतीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थइत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डलविधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका

श्री चन्दनामती माताजी का संक्षिप्त परिचय

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

नाम–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

दीक्षा पूर्व नाम–ब्र. कु. माधुरी शास्त्री

जन्मतिथि–18-5-1958 (ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या)

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जी जैन

भाई–चार (कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जीकैलाशचंद, स्व. प्रकाशचंद, सुभाषचंद)

बहन–आठ (गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री अभयमती माताजी सहित)

ब्रह्मचर्य व्रत–25 अक्टूबर 1969 को जयपुर में 2 वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत एवं सन् 1971, अजमेर में आजन्म ब्रह्मचर्य सुगंधदशमी को गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

धार्मिक अध्ययन–1972 में सोलापुर से ''शास्त्री'' की उपाधि, 1973 में ''विद्यावाचस्पति'' की उपाधि।

द्वितीय एवं सप्तम प्रतिमा के व्रत–सन् 1981 एवं 1987 में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

आर्यिका दीक्षा–हस्तिनापुर में 13-8-1989, श्रावण शु. 11 को गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से

प्रज्ञाश्रमणी की उपाधि–1997 में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान के पश्चात् राजधानी दिल्ली में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा।

पीएच.डी. की मानद उपाधि–तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को विश्वविद्यालय में।

साहित्यिक योगदान–चारित्रचन्द्रिका, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, नवग्रहशांति विधान, भक्तामर विधान, समयसार विधान आदि लगभग 100 पुस्तकों का लेखन, वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा ''षट्खण्डागम (प्राचीनतम जैन सूत्र ग्रंथ) एवं ''भगवान ऋषभदेव चरितम्'' की संस्कृत टीकाओं का हिन्दी अनुवाद कार्य, 'समयसार' एवं 'कुन्दकुन्दमणिमाला' का हिन्दी पद्यानुवाद, भगवान महावीर स्तोत्र की संस्कृत एवं हिन्दी टीका, भगवान महावीर हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोष, जैन वर्शिप (अंग्रेजी में पूजा, भजन, बारहभावना आदि) भजन (लगभग 1000), पूजन, चालीसा, स्तोत्र इत्यादि लेखन की अद्भुत क्षमता, हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं की सिद्धहस्त लेखिका, गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ एवं भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि ग्रंथ की प्रधान सम्पादिका। वर्तमान में 'इन्साइक्लोपीडिया ऑफ जैनिज्म डॉट कॉम' (ऑनलाईन जैन विश्वकोश) के सम्पादन में संलग्न।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है– कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस तीर्थंकर मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

विषय-सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ
1.	काकन्दी तीर्थ परिचय	1
2.	भगवान पुष्पदंतनाथ-एक दृष्टि में	4
3.	भगवान पुष्पदंतनाथ का परिचय	5
4.	नवदेवता पूजन	6
5.	काकन्दी तीर्थ पूजा	10
6.	भगवान श्री पुष्पदंतनाथ पूजा	16
7.	शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदन्तनाथ पूजा	22
8.	श्री पुष्पदंतनाथ जिन स्तोत्र	27
9.	नवग्रहशांति स्तोत्र	28
10.	तीर्थंकर जन्मभूमि वंदना	30
11.	तीर्थंकर जन्मभूमि तीर्थ वंदना	32
12.	चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों की नामावली	34
13.	काकन्दी तीर्थ की आरती	35
14.	पुष्पदन्तनाथ भगवान की आरती	36
15.	भजन (आओ रे आओ रे सब मिल के आओ)	37
16.	भजन (करो रे अभिषेक प्रभू का, पुष्पदंतेश प्रभू का)	38
17.	भजन (क्षीरोदधि के जल से, मस्तकाभिषेक करो)	39
18.	भजन (पुष्पदंत प्रभु जन्मभूमि में, गूँज उठी शहनाई)	40
19.	भजन (पंखिड़ा तू उड़ के जाना स्वर्गपुरी में)	41
20.	भजन (पुष्पदंतनाथ का, नवम तीर्थनाथ का)	42
21.	भजन (कलश हाथों में लेकर, करूँ अभिषेक प्रभू पर)	43
22.	भजन (तीर्थ को वन्दन कर लो रे-2)	44
23.	भजन (इस युग की माँ शारदे)	45
24.	भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकंदी में भव्यतापूर्वक पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न	46

काकन्दी तीर्थ परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

जैनधर्म के नवमें तीर्थंकर ''श्री पुष्पदन्तनाथ'' के जन्म से पवित्र काकन्दी नगरी वर्तमान में ''खुखुन्दू'' नाम से भी प्रसिद्ध है। पूर्वी उत्तरप्रदेश में गोरखपुर के निकट देवरिया जिले में ''खुखुन्दू'' नाम का एक कस्बा है।

जैन परम्परा में अत्यन्त प्राचीन काल से ''काकन्दी'' का नाम बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है। यहाँ भगवान पुष्पदंत के गर्भ-जन्म कल्याणक तो हुए ही हैं तथा इसी नगर के पुष्पक वन में उनका दीक्षा कल्याणक भी हुआ था पुनः कभी किसी काल में यह पुष्पक वन ही ''ककुभ'' नाम से कहलाने लगा और एक अलग तीर्थधाम बन गया। धीरे-धीरे काल के थपेड़ों ने दोनों ही तीर्थों को खण्डहरों के रूप में परिवर्तित कर दिया जो प्राचीन संस्कृति को अपनी मूक वाणी में बतला रहे हैं।

जयरामा माता और सुग्रीव पिता के यहाँ काकन्दी नगरी में मगशिर शुक्ला प्रतिपदा को मूल नक्षत्र में भगवान पुष्पदन्तनाथ का जन्म हुआ। इन्द्रों ने वहाँ पन्द्रह माह तक रत्नवृष्टि की और उनका गर्भ-जन्म कल्याणक महोत्सव मनाया था।

पुष्पक वन में दीक्षा के पश्चात् भी वर्णन आता है कि चार वर्षों के भ्रमण के पश्चात् वे पुनः विहार करते हुए काकन्दी के पुष्पक वन में पधारे थे और वहींउन्हें ''नागवृक्ष'' के नीचे कार्तिक शुक्ला द्वितीया को केवलज्ञान की प्राप्ति हुईथी अतः काकन्दी उनके चार कल्याणकों से परम पावन नगरी बन गई है। केवलज्ञान उत्पन्न होने पर इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने समवसरण की रचना की तब भगवान का प्रथम कल्याणकारी दिव्य उपदेश यहीं हुआ था। ककुभ ग्राम को भी वर्तमान में ''कहाऊँ'' नाम से जाना जाता है, आज काकन्दी यहाँ से 16 किमी. दूर है।

यहाँ पर लगभग 1800 वर्ष प्राचीन 31 फुट ऊँचा एक मानस्तंभ बना हुआ है, जिसमें चारों ओर दिगम्बर जैन मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। इसी स्थल को भगवान

पुष्पदंतनाथ का दीक्षा एवं ज्ञानकल्याणक तीर्थ माना जाता है।

कल्याणक भूमि होने के साथ-साथ यहाँ का एक प्राचीन इतिहास भी ग्रंथों में आता है कि यह महापुरुषों की उपसर्ग एवं निर्वाणभूमि भी है। भगवती आराधना (गाथा-1559) और आराधना कथा कोष (कथा 67) के आधार पर ''भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ'' भाग-1 में काकन्दी नगरी के परिचय में अनेक ऐतिहासिक तथ्यों का उल्लेख करते हुए यहाँ से संबंधित अभयघोष मुनिराज का कथानक भी प्रस्तुत किया है। जो निम्न प्रकार है–

अभयघोष काकन्दी के राजा थे। उन्होंने एक बार एक कछुए की चारों टाँगे तलवार से काट दीं जिससे वह तड़प-तड़प कर मर गया और कुछ पुण्यवश मरकर उनका ही पुत्र हो गया। कुछ दिनों बाद अभयघोष ने चन्द्रग्रहण देखकर मुनि दीक्षा ले ली। एक बार वे काकन्दी के उद्यान में तपस्या में लीन थे।

उनका पुत्र चंडवेग भ्रमण करते हुए वहाँ से निकला। जैसे ही उसने मुनि अभयघोष को देखा उसके मन में पूर्वजन्म संबंधी संस्कारों के कारण क्रोध की अग्नि भड़क उठी। उसने अपने वैर का बदला चुकाने के लिए यह उपयुक्त अवसर समझा क्योंकि वह जानता था कि ध्यान के समय मुनिराज किसी अत्याचार का प्रतीकार तो करेंगे नहीं। उसने तीक्ष्ण धार वाले शस्त्रों से निर्दयता पूर्वक उनकेहाथ-पैर आदि अंगों को काटना प्रारंभ कर दिया। ध्यानलीन मुनिराज आत्मनिष्ठ थे, इस उपसर्ग को उन्होंने तीव्र वैराग्य भाव से सहन किया और धर्मध्यान से शुक्लध्यान अवस्था में आकर चार घातिया कर्मों को नष्ट कर कैवल्य अवस्था प्राप्त कर ली। अन्तकृत्केवली बनकर अभयघोष मुनिराज ने काकन्दी के उद्यान से मोक्षधाम को प्राप्त किया इसलिए यह नगरी ''सिद्धक्षेत्र'' के रूप में भी जानी जाती है।

उक्त विषयक यहाँ विभिन्न ग्रंथों के उदाहरण प्रस्तुत हैं–

काइंदि अभयघोसो विचंडवेगेण छिण्णसव्वंगो।
तं वेयणमधियासिय पडिवण्णो उत्तमं अट्ठं।।1559।।

अर्थात् काकन्दी नाम नगरी विषै अभयघोष नामा मुनिहू चंडवेग नाम कोऊ वैरीकरि सर्व अंग छेद्या हुवा तिस घोर वेदना कूँ प्राप्त होय करिके उत्तम अर्थ जो रत्नत्रय ताकूं प्राप्त होत भया।

इसी प्रकार मरणकंडिका में वर्णन आया है–

काकंद्यां चंडवेगेन छिन्ननिःशेष विग्रहः।
विषह्याभयघोषोऽपि पीडामाराधनां गतः।।1628।।

अर्थ—काकंदी नगरी में चंडवेग नामके दुष्ट व्यक्ति द्वारा सारा शरीर बाणों से घायल होने पर भी अभयघोष नाम के यतिराज ने उस उग्र पीड़ा को सहनकर आराधना को प्राप्त किया।

वृहत् समाधिमरण में भी लिखा है—

अभयघोष मुनि काकन्दीपुर महावेदना पाई।
वैरीचण्ड ने सब तन छेद्यो दुःख दीना अधिकाई।।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता आराधन चितधारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है मृत्यु महोत्सव भारी।।

ये सभी प्रमाण काकन्दी नगरी को सिद्धक्षेत्र की संज्ञा प्राप्त कराने में हेतु हैं।

वर्तमान में वहाँ खेतों के बीच में एक प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर बना हुआ है। लोगों का विश्वास है कि भगवान पुष्पदंतनाथ का जन्म यहीं हुआ था। मैंने काकन्दी तीर्थ का प्रत्यक्ष दर्शन तो नहीं किया है किन्तु विद्वानों के द्वारा लिखित इतिहास से ज्ञात होता है कि मंदिर में एक वेदी है जो चार स्तम्भों पर मण्डपनुमा बनी हुई है। वहाँ एक शिलाफलक में भगवान नेमिनाथ की कृष्ण पाषाण की पद्मासन प्रतिमा विराजमान थी, जो यहाँ की मूलनायक प्रतिमा कहलाती थी। इसके अतिरिक्त एक श्वेत पाषाण की 11 इंच ऊँची पद्मासन प्रतिमा भगवान पुष्पदंतनाथ की विक्रम संवत् 1548 की थी, इसी प्रकार से कुछ तीर्थंकर प्रतिमाएं और यक्ष-यक्षिणी की मूर्तियाँ भी विराजमान थीं, ये सभी प्रतिमाएँ कुछ वर्षों पूर्व चोरी चली गई।

अन्य तीर्थों की अपेक्षा अभी यह तीर्थ बिल्कुल उपेक्षित था जिसके जीर्णोद्धार एवं विकास की आवश्यकता की पूर्ति पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के माध्यम से हुई अतः अब यह काकन्दी तीर्थ प्राचीन जन्मभूमि तीर्थ के रूप में निखर कर विश्व के समक्ष अपनी दिव्य प्रभा प्रसारित कर रहा है।

काकंदी में अब एक सुन्दर कलात्मक विशाल जिनमंदिर का निर्माण हुआ है, उसमें 9 फुट उत्तुंग ग्रेनाइट पाषाण की सुन्दर प्रतिमा भगवान पुष्पदंतनाथ की विराजमान हुई हैं तथा कीर्तिस्तंभ का नवनिर्माण करके उसमें 8 प्रतिमाएँ विराजमान की गई हैं। इन सभी की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा दिनाँक 17 से 21 जून 2010 (ज्येष्ठ शु. षष्ठी से दशमी तक) पूज्य क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज के सान्निध्य में सम्पन्न हो चुकी है।

इस पावन तीर्थ काकन्दी एवं वहाँ जन्में भगवान पुष्पदंतनाथ के चरणों में शतशः नमन करते हुए उसके निरन्तर विकास की मंगल कामना है।

भगवान पुष्पदंतनाथ-एक दृष्टि में

—गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

जन्मभूमि	**— काकन्दी (उत्तर प्रदेश)**		
पिता	— महाराज सुग्रीव	**माता**	—महारानी जयरामा
वर्ण	— क्षत्रिय	**गोत्र**	—काश्यप
वंश	— इक्ष्वाकु	**देहवर्ण**	—कुंदपुष्प सम श्वेत
चिन्ह	— मगर	**आयु**	—दो लाख पूर्व वर्ष
अवगाहना	— चार सौ हाथ	**गर्भ**	—फाल्गुन कृ.9
जन्म	— मगसिर शु.1	**तप**	—मगसिर शु. 1
दीक्षावन	— पुष्पकवन	**दीक्षा वृक्ष**	—नागवृक्ष
प्रथम आहार	— शैलपुर के राजा पुष्पमित्र द्वारा (खीर)		
केवलज्ञान वन एवं वृक्ष	— पुष्पकवन एवं नागवृक्ष		
केवलज्ञान	— कार्तिक शु.2	**मोक्ष**	—भाद्रपद शु.8
मोक्षस्थल	— सम्मेद शिखर पर्वत		

समवसरण में चतुर्विध संघ

गणधर	— श्री विदर्भ आदि 88	**मुनि**	—दो लाख
गणिनी	— आर्यिका घोषार्या		
आर्यिका	— तीन लाख अस्सी हजार		
श्रावक	— दो लाख	**श्राविका**	—पांच लाख
जिनशासन यक्ष	— अजित देव	**यक्षी**	—महाकाली देवी

भगवान पुष्पदन्तनाथ वर्तमान वीर नि.सं. 2539 से 39499 वर्ष कम दस करोड़ सागर पहले मोक्ष गए हैं।

अर्घ्य—नरेन्द्रछंद

जल गंधादिक अर्घ्य बनाकर, सुवरण पुष्प मिलाऊँ।
केवल ज्ञानमती हेतू मैं, प्रभु को अर्घ्य चढ़ाऊँ।।
पुष्पदंत जिन पद पंकज को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान पुष्पदंतनाथ का परिचय

–गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

पुष्करार्ध द्वीप के पूर्व दिग्भाग में जो मेरु पर्वत है उसके पूर्व विदेह क्षेत्र में सीता नदी के उत्तर तट पर पुष्कलावती नाम का एक देश है उसकी पुण्डरीकिणी नगरी में महापद्म नाम का राजा राज्य करता था। किसी दिन भूतहित जिनराज की वंदना करके धर्मोपदेश सुनकर विरक्तमना राजा दीक्षित हो गया। ग्यारह अंगरूपी समुद्र का पारगामी होकर सोलहकारण भावनाओं से तीर्थंकर प्रकृति का बंध कर लिया और समाधिमरण के प्रभाव से प्राणत स्वर्ग का इन्द्र हो गया।

पंचकल्याणक वैभव–

इस जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र की काकन्दी नगरी में इक्ष्वाकु वंशीय काश्यप गोत्रीय सुग्रीव नाम का क्षत्रिय राजा था, उनकी जयरामा नाम की पट्टरानी थी। उन्होंने फाल्गुन कृष्ण नवमी के दिन 'प्राणतेन्द्र' को गर्भ में धारण किया और मार्गशीर्ष शुक्ला प्रतिपदा के दिन पुत्र को जन्म दिया। इन्द्र ने बालक का नाम 'पुष्पदन्त' रखा। पुष्पदन्तनाथ राज्य करते हुए एक दिन उल्कापात से विरक्ति को प्राप्त हुए तभी लौकान्तिक देवों से स्तुत्य भगवान इन्द्र के द्वारा लाई गई 'सूर्यप्रभा' पालकी में बैठकर मगसिर सुदी प्रतिपदा को दीक्षित हो गये। शैलपुर नगर के पुष्पमित्र राजा ने भगवान को प्रथम आहार दान दिया था। छद्मस्थ अवस्था के चार वर्ष के बाद नाग वृक्ष के नीचे विराजमान भगवान को कार्तिक शुक्ला द्वितीया के दिन केवलज्ञान प्राप्त हो गया। आर्यदेश में विहार कर धर्मोपदेश देते हुए भगवान अन्त में सम्मेदशिखर पहुँचकर भाद्रपद शुक्ला अष्टमी के दिन सर्व कर्म से मुक्ति को प्राप्त हो गये।

पंचकल्याणक के स्वामी उन नवमें तीर्थंकर भगवान पुष्पदन्तनाथ के श्रीचरणों में कोटि-कोटि नमन।

नवदेवता पूजन

–गीता छन्द –

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक –

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नव सुचढ़ायके।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।**
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

***जाप्य –*ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

सोरठा – **चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हों।**
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।1।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति.....)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकलजंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।
जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।
जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।5।।
जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।
नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।

दोहा – नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यालयेभ्यो जयमाला अर्घ्यं.....।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।9।।

इत्याशीर्वादः।

काकन्दी तीर्थ पूजा

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

–स्थापना –

(तर्ज-आओ बच्चों.....)

चलो चलें काकन्दी नगरी, पुष्पदन्त को नमन करें।
जन्मभूमि की पूजन करके, अपना पावन जनम करें।।
तीरथ को नमन, तीरथ को नमन-2।।टेक.।।

चौबिस तीर्थंकर में से, श्रीपुष्पदन्त नवमें प्रभु हैं।
उनसे काकन्दी नगरी ने, प्राप्त किया वैभव सब है।।
इन्द्र मनुज भी आकर जिस, तीरथ को शत-शत नमन करें।
जन्मभूमि की पूजन करके, अपना पावन जनम करें।।
तीरथ को नमन, तीरथ को नमन-2।।1।।

आह्वानन स्थापन सन्निधिकरण, विधी हम करते हैं।
पूजन में काकन्दी नगरी, का स्थापन करते हैं।।
आत्मशक्ति प्रगटाने हेतु, तीर्थक्षेत्र का यजन करें।
जन्मभूमि की पूजन करके, अपना पावन जनम करें।।
तीरथ को नमन, तीरथ को नमन-2।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक (स्रग्विणी छंद) –

स्वर्ण भृंगार में क्षीर सम नीर ले।
धार डालूँ तो मिट जाय भव पीर है।।

तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय जन्म-जरामृत्युविनाशनय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिस के चन्दन मलयगिरि का लाया प्रभो।
भव का संताप मैंने नशाया विभो।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमि काकन्दीतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

शालि के पुंज से नाथ पूजा करूँ।
पूर्ण आनंदमय आत्मसुख को वरूँ।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमि काकन्दीतीर्थक्षेत्राय अक्षय-पदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मोगरा जूही चंपा चमेली कुसुम ।
तीर्थ पद में चढ़ा कर लहूँ पद विमल।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरियां लाडुओं से भरा थाल है।
रोग क्षुध नाश हेतू चढ़ाऊँ तुम्हें।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के दीपक की ज्योति जलाई प्रभो।
स्वर्ण थाली में आरति सजाई प्रभो।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप को अग्निघट में जलाऊँ प्रभो।
कर्म की धूम्र चहुँदिश उड़ाऊँ प्रभो।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल अनंनास नींबू नरंगी लिया।
मोक्षफल आश से नाथ अर्पित किया।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि युत अर्घ्य अर्पण करूँ।
''चन्दनामति'' प्रभू पद समर्पण करूँ।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुःख रंच ना।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शेरछन्द –

गंगानदी के नीर से त्रयधार करूँ मैं।
त्रयरत्न प्राप्ति हेतु शांतिधार करूँ मैं।।

शांतये शांतिधारा

नाना तरह के पुष्प अंजूली में भर लिया।
पुष्पांजली कर मैंने आत्मसौख्य वर लिया।।

दिव्य पुष्पांजलिः

–अर्घ्य (शेर छन्द) –

फाल्गुन वदी नवमी जहाँ प्रभु गर्भ में आये।
काकन्दी में जयरामा माँ को स्वप्न दिखाये।।
उस गर्भकल्याणक से पूज्य भूमि को वन्दूँ।
काकन्दी को मैं अर्घ्य चढ़ा दुःख को खंडूँ।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथगर्भकल्याणकपवित्रकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मगशिर सुदी एकम को जन्म पुष्पदंत का।
काकन्दी में हुआ था जब त्रैलोक्य धन्य था।।
उस जन्मकल्याणक पवित्र तीर्थ को नमूँ।
कर अर्घ्य समर्पण प्रभू तीर्थेश को प्रणमूँ।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मकल्याणकपवित्रकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मगशिर सुदी एकम जहाँ वैराग्य हुआ था।
श्री पुष्पदंत जिनवर ने त्याग लिया था।।
काकन्दी का वह पुष्पक वन हो गया पावन।
उस तीर्थ को ही मेरा यह अर्घ्य समर्पण।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदी दुतिया को जहाँ ज्ञान हुआ था।
जिनवर समवसरण का निर्माण हुआ था।।
काकन्दि उस पवित्र धरा को नमन करूँ।
मैं अर्घ्य चढ़ा घाति कर्म को हनन करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रकाकन्दी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीपुष्पदंत जिनवर के चार कल्याणक।
काकन्दि में हुए अतः वह भूमि नमूँ नित।।
सम्मेदशिखर से पुनः वे मोक्ष पधारे।
उस सिद्धभूमि को जजूँ बंधन कटें सारे।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथनिर्वाणकल्याणकेन पवित्रसम्मेदशिखरक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र –ॐ ह्रीं काकन्दीजन्मभूमिपवित्रीकृतश्रीपुष्पदंतनाथजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

–गीताछन्द –

जय तीर्थ काकन्दी जगत में, जन्मभूमि जिनेन्द्र की।
जय चार कल्याणक धरा वह, पुष्पदन्त जिनेन्द्र की।।
जय मात जयरामा व पितु, सुग्रीव का शासन जहाँ।
जयवंत हो त्रैलोक्यपूज्य, जिनेन्द्र का शासन जहाँ।।1।।

शुभ स्वर्ग प्राणत का सुखी, जीवन व्यतीत किया प्रभो।
प्रकृती जो तीर्थंकर बंधी थी, उसकी थी महिमा प्रभो।।
माँ के गरभ में आने से, छह माह पहले से हुई।
काकन्दि नगरी में धनद, द्वारा रतन वर्षा हुई।।2।।

रोमांच होता है हृदय में, जन्म का क्षण सोचकर।
जब स्वर्ग पूरा आ गया था, इस धरा पर भक्तिवश।।
सौधर्म सुरपति की शची, इन्द्राणी का सौभाग्य था।
जिसने प्रसूतिगृह में जा, पहले किया प्रभुदर्श था।।3।।

मायामयी बालक को रख, माँ को किया निद्रामगन।
गोदी में लाकर जिनशिशू को, कर लिया जीवन सफल।।
फिर इन्द्र ने जिनराज दर्शन, हेतु नेत्र सहस किया।।
मेरू शिखर पर जा प्रभू के, जन्म का उत्सव किया।।4।।

भारत की ही धरती का यह, इतिहास पौराणिक रहा।
त्रेसठ शलाका पुरुषों का, जिसने कथानक है कहा।।
जहाँ विश्वमैत्री का सदा, संदेश देते ऋषि मुनी।
उस देश में ही जिनवरों के, जन्म की महिमा सुनी।।5।।

तीर्थंकरों की श्रेणि में, श्रीपुष्पदंत नवम कहे।
उनके जनम से धन्य, काकन्दीपुरी के नृप रहे।।
बीते करोड़ों वर्ष फिर भी, वह धरा तो पूज्य है।
पूजी सदा जाती रहेगी, उस धरा की धूल है।।6।।

जहाँ देख उल्कापात प्रभु, वैरागि बनकर चल दिये।
साम्राज्य और कुटुम्ब को, समझा क्षणिक सब तज दिये।।
दीक्षा लिया तप कर जहाँ, कैवल्यज्ञान प्रगट किया।
उस पुण्यथान जिनेन्द्र भूमी, का सदा अर्चन किया।।7।।

जयमाल में पूर्णार्घ्य का, यह थाल अर्पित कर दिया।
गुणमाल में निज आत्म का, उद्गार प्रगटित कर दिया।।
स्वीकार कर लो द्रव्य मेरा, तीर्थ अर्चन कर रहा।
भंडार भर दो ''चन्दनामति'', आत्मचिंतन चल रहा।।8।।

–दोहा –

पुष्पदन्त जन्मस्थली, काकन्दी शुभ तीर्थ।
अर्घ्य समर्पण कर प्रभो, पाऊँ आतम तीर्थ।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छन्द –

जो भव्य प्राणी पुष्पदन्त की, जन्मभूमी को नमें।
तीर्थेश प्रभु की चरण रज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
वे ''चन्दनामति'' एक दिन खुद तीर्थ सम बन जाएंगे।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः ।।

भगवान श्री पुष्पदंतनाथ पूजा

–गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

–अथ स्थापना (गीता छंद) –

श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्र त्रिभुवन अग्र पर तिष्ठें सदा।
तीर्थेश नवमें सिद्ध हैं शतइन्द्र पूजें सर्वदा।।
चउज्ञानधारी गणपती प्रभु आपके गुण गावते।
आह्वान कर पूजें यहाँ प्रभु भक्ति से शिर नावते।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक (नरेन्द्र छंद) –

सरयू नदि का शीतल जल ले, जिनपद धार करूँ मैं।
साम्य सुधारस शीतल पीकर, भव भव त्रास हरूँ मैं।।
पुष्पदंत जिन पद पंकज को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर चंदन घिस, जिनपद में चर्चूं मैं।
मानस तनु आगंतुक त्रयविध, ताप हरो अर्चूं मैं।।
पुष्पदंत जिन पद पंकज को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम उज्ज्वल अक्षत से, प्रभु ढिग पुंज चढ़ाऊँ।
निज गुणमणि को प्रगटित करके, फेर न भव में आऊँ।।
पुष्पदंत जिन पद पंकज को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही मोगरा सेवंती, वासंती पुष्प चढ़ाऊँ।
कामदेव को भस्मसात् कर, आतम सौख्य बढ़ाऊँ।।
पुष्पदंत जिन पद पंकज को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर पेनी लड्डू पेड़ा, रसगुल्ला भर थाली।
तुम्हें चढ़ाऊँ क्षुधा नाश हो, भरे मनोरथ खाली।।
पुष्पदंत जिन पद पंकज को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णदीप में ज्योति जलाऊँ, करूँ आरती रुचि से।
मोह अंधेरा दूर भगे सब, ज्ञान भारती प्रगटे।।
पुष्पदंत जिन पद पंकज को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीर्घ नशाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला चंदन कर्पूरादिक, मिश्रित धूप सुगंधी।
जिन सन्मुख अग्नी में खेऊँ, धूम उड़े दिश अंधी।।
पुष्पदंत जिन पद पंकज को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आड़ू लीची सेव संतरा आम अनार चढ़ाऊँ।
सरस मधुर फल पाने हेतू शत शत शीश झुकाऊँ।।
पुष्पदंत जिन पद पंकज को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक अर्घ्य बनाकर सुवरण पुष्प मिलाऊँ।
केवल ज्ञानमती हेतू मैं, प्रभु को अर्घ्य चढ़ाऊँ।।

पुष्पदंत जिन पद पंकज को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

यमुना सरिता नीर, प्रभु चरणों धारा करूँ।
मिले निजात्म समीर, शांतीधारा शं करे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित खिले सरोज, जिन चरणों अर्पण करूँ।
निर्मद करूँ मनोज, पाऊँ जिनगुण संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ पंचकल्याणक अर्घ्य

–रोला छंद –

प्राणत स्वर्ग विहाय, काकंदीपुर आये।
इंद्र सभी हर्षाय, गर्भकल्याण मनाये।।
पिता कहे सुग्रीव, जयरामा जगमाता।
नवमी फागुन कृष्ण, जजत मिले सुखसाता।।1।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णानवम्यां श्रीपुष्पदंतनाथगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर एकम शुक्ल, जन्म लिया तीर्थंकर।
रुचकवासिनी देवि, जातकर्म में तत्पर।।
शची प्रभू को गोद, ले स्त्रीलिंग छेदा।
जन्म महोत्सव देव, करके भव दुख भेदा।।2।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाप्रतिपदायां श्रीपुष्पदंतनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उल्का गिरते देख, प्रभु विरक्त अपराण्हे।
मगसिर शुक्ला एक, तप लक्ष्मी को वरने।।

पालकि रविप्रभ बैठ, पुष्पकवन में पहुँचे।
जजूँ आज शिर टेक, तपकल्याणक हित मैं।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाप्रतिपदायां श्रीपुष्पदंतनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ला दूज, सायं पुष्पक वन में।
घाति कर्म से छूट, नागवृक्ष के तल में।।
केवल रवि प्रगटाय, समवसरण में तिष्ठे।
स्वात्म निधी मिल जाय, इसीलिए हम पूजें।।।4।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वितीयायां श्रीपुष्पदंतनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों शुक्ला आठ, सायं सहस मुनी ले।
सकल कर्म को काट, गिरि सम्मेद शिखर से।।
पुष्पदंत भगवंत, सिद्धिरमा के स्वामी।
जजत मिले भव अंत, बनूँ स्वात्म विश्रामी।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाअष्टम्यां श्रीपुष्पदंतनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय नमः।**

जयमाला

–सोरठा –

त्रिभुवन तिलक महान्, पुष्पदंत तीर्थेश हैं।
नित्य करूँ गुणगान, पाऊँ भेद विज्ञान मैं।।1।।

–रोला छंद –

अहो! जिनेश्वर देव! सोलह भावन भाया।
प्रकृती अतिशय पुण्य, तीर्थंकर उपजाया।।
पंचकल्याणक ईश, हो असंख्य जन तारे।
त्रिभुवन पति नत शीश, कर्म कलंक निवारें।।2।।

नाममंत्र भी आप, सर्वमनोरथ पूरे।
जो नित करते जाप, सर्व विघ्न को चूरें।।
तुम वंदत तत्काल, रोग समूल हरें हैं।
पूजन करके भव्य, शोक निमूल करे हैं।।3।।

इन्द्रिय बल उच्छ्वास, आयू प्राण कहाते।
ये पुद्गल परसंग, इनको जीव धराते।।
ये व्यवहारिक प्राण, इन बिन मरण कहावे।
सब संसारी जीव, इनसे जन्म धरावें।।4।।

निश्चयनय से एक, प्राण चेतना जाना।
इनका मरण न होय, यह निश्चय मन ठाना।।
यही प्राण मुझ पास, शाश्वत काल रहेगा।
शुद्ध चेतना प्राण, सर्व शरीर दहेगा।।5।।

कब ऐसी गति होय, पुद्गल प्राण नशाऊँ।
ज्ञानदर्शमय शुद्ध, प्राण चेतना पाऊँ।।
ज्ञान चेतना पूर्ण, कर तन्मय हो जाऊँ।
दश प्राणों को नाश, ज्ञानमती बन जाऊँ।।6।।

गुण अनंत भगवंत, तब हों प्रगट हमारे।
जब हो तनु का अंत, यह जिनवचन उचारें।।
समवसरण में आप, दिव्यध्वनी से जन को।
करते हैं निष्पाप, नमूँ नमूँ नित तुम को।।7।।

श्रीविदर्भमुनि आदि, अट्ठासी गणधर थे।
दोय लाख मुनि नाथ, नग्न दिगम्बर गुरु थे।।
घोषार्या सुप्रधान, आर्यिकाओं की गणिनी।
त्रय लख अस्सी सहस, आर्यिकाएं गुणश्रमणी।।8।।

दोय लाख जिनभक्त, श्रावक अणुव्रती थे।
पाँच लाख सम्यक्त्व, सहित श्राविका तिष्ठे।।

जिन भक्ती वर तीर्थ, उसमें स्नान किया था।
भव अनंत के पाप, धो मन शुद्ध किया था।।9।।

चार शतक कर तुंग, चंद्र सदृश तनु सुंदर।
दोय लाख पूर्वायु, वर्ष आयु थी मनहर।।
चिन्ह मगर से नाथ, सब भविजन पहचाने।
नमूँ नमूँ नत माथ, गुरुओं के गुरु माने।।10।।

–दोहा –

ध्यानामृत पीकर भये, मृत्युंजय प्रभु आप।
धन्य घड़ी प्रभु भक्ति की, जजत मिटे भव ताप।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–सोरठा –

प्रभु मैं याचूँ आज, जब तक मुक्ति नहीं मिले।
भव भव में सन्यास, सम्यग्ज्ञानमती सहित।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं अजितयक्ष महाकालीयक्षीसहिताय श्रीपुष्पदन्तनाथजिनेन्द्राय नमः।

शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदन्तनाथ पूजा

स्थापना-शंभु छंद

हे पुष्पदन्त भगवान् पुष्प तव, चरणों में जब चढ़ता है।
पूजन की विधि में सर्वप्रथम, स्थापन कर वह कहता है।।
हो गया जन्म सार्थक मेरा, प्रभुपद में जब स्थान मिला।
मैं धूल में गिरकर मिट जाता, लेकिन यह तो सौभाग्य खिला।।1।।

-दोहा-

आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण प्रधान।
पुष्पदन्त की अर्चना, क्रमशः दे निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

-अष्टक-चामर छंद-

साधुचित्त के समान शुद्ध नीर ले लिया।
धार दे जिनेन्द्रपाद भव का तीर ले लिया।।
पुष्पदंतनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।1।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य चन्दन की ही प्रतीक केशर मेरी।
पादपद्म में विलेपते सुगंधि है मिली।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।2।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तुच्छ तंदुलों में मोतियों की कल्पना मेरी।
नाथ! पूर्ण होएगी जरूर साधना मेरी।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।3।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूल हों या पीले चावलों में पुष्पभावना।
अर्चना के रूप में फलेगी मेरी भावना।।
पुष्पदंतनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शांति का सदैव पूर हो।।4।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खीर और पूरियों को थाल में भरा लिया।
भूख व्याधि शांति के लिए चरू चढ़ा दिया।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।5।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपकों की ज्योति से प्रकाश फैलता सदा।
प्रभु की आरती से मन की ज्योति पाऊँ सर्वदा।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।6।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपघट में खेके पापकर्म नाश हों।
श्रीजिनेन्द्र की कृपा से पुण्य का विकास हो।।

पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।7।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्फलों से युक्त मोक्षफल की याचना करूँ।
द्राक्ष आम्र आदि अर्प्य यह ही भावना करूँ।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।8।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलफलादि द्रव्य ले करूँ जिनेन्द्र अर्चना।
तुम समान पद मिले, आश यह ही ''चन्दना''।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।9।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय की प्राप्ति हेतु तीन धार मैं करूँ।
जन्म औ जरा मरण त्रिरोग नाश मैं करूँ।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रहअरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

श्री जिनेन्द्र के समीप पुष्प अंजली भरूँ।
पुष्प को बिखेर कर सुगंधि सर्वदिक् करूँ।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रहअरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

शुक्र ग्रह शांति का अर्घ्य

तर्ज-चाँद मेरे आ जा रे.....

नाथ की पूजन करते हैं-2,
अष्टद्रव्य, की थाली प्रभू के, चरणों में धरते हैं।।नाथ की.....।।टेक.।।

जब अशुभ कर्म के कारण, तन में व्याधी आती है।
धनहानि कलह आदिक से, मन में आंधी आती है।।
नाथ की पूजन करते हैं।।1।।

प्रभु पुष्पदंत तीर्थंकर, ग्रहशुक्र के स्वामी माने।
वे इस ग्रह की शान्ती में, ''चन्दना'' प्रमुख हैं माने।।
नाथ की पूजन करते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय नमः।**

जयमाला

भगवान् तुम्हारी पूजन से, सम्यग्दर्शन मिल जाता है।
हे नाथ! तुम्हारे अर्चन से, निज अन्तर्मन खिल जाता है।।टेक.।।

जैसे अंगार दहकता है, जल सबकी प्यास बुझाता है।
सूरज जैसे देकर प्रकाश, धरती का तिमिर भगाता है।।
वैसे ही प्रभु मुख दर्शन से, मानों सब कुछ मिल जाता है।
हे नाथ! तुम्हारे अर्चन से, निज अन्तर्मन खिल जाता है।।1।।

दर्शन के भाव हुए जिस क्षण, उपवास का फल प्रारंभ हुआ।
चलकर जब पहुँच गए मंदिर, लक्षोपवास फल सहज हुआ।।
प्रभु सम्मुख आ गद्गद मन से, भव भव का अघ धुल जाता है।
हे नाथ! तुम्हारे अर्चन से, निज अन्तर्मन खिल जाता है।।2।।

भक्ती में शक्ति अचिन्त्य कही, यह भुक्ति मुक्ति सब कुछ देती।
जिनप्रतिमा भले अचेतन हैं, फिर भी चेतन को फल देतीं।।
पौराणिक कथन ''चन्दना यह, कलियुग में भी फलदाता है।
हे नाथ! तुम्हारे अर्चन से, निज अन्तर्मन खिल जाता है।।3।।

हो शुक्र अनिष्ट यदी प्रभुवर, दुख इष्ट वियोग सताता है।
यह शुभ हो जावे यदि जिनवर, सांसारिक सौख्य दिलाता है।।
प्रभु पुष्पदन्त भगवान् तेरी, भक्ती से सब मिल जाता है।
हे नाथ! तुम्हारे अर्चन से, निज अन्तर्मन खिल जाता है।।4।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः

पुष्पदंत की अर्चना, हरे सकल दुख दोष।
करे शुक्रग्रह सान्त्वना, भरे स्वात्मसुख तोष।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

श्री पुष्पदंतनाथ जिन स्तोत्र

–गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

त्रैलोक्यपति देवेन्द्र नमित, साधूगण वंद्य सदा जिनवर।
सुख आत्माधीन अचल तव है, स्थान भ्रमण विरहित सुस्थिर।।
तव कीर्तिलता त्रिभुवन व्यापी, औ सिद्धि रमा तव चरणरता।
तव दिव्यसुधावच भव जलधि, से तिरने को उत्तम नौका।।1।।

काकंदी में सुग्रीव पिता, माता जयरामा जग पूजित।
फाल्गुनवदि नवमी के दिन प्रभु, गर्भावतरण मंगल मंडित।।
मगसिर शुक्ला प्रतिपद तिथि थी, जब जन्में थे भगवान यहाँ।
उन पुष्पदंत की दिव्यकथा, हरती है भवभय त्रास महा।।2।।

मगसिर सुदि एकम के प्रभु ने, जिनमुद्रा धर मोहारि हना।
कार्तिक सुदि दूज दिवस केवल-लक्ष्मी ने आन लिया शरणा।।
भादों सुदि अष्टमि के दिन प्रभु, सम्मेदाचल से सिद्ध हुए।
सुखस्वात्मसुधारस पान तृप्त, त्रिभुवन के अग्र विराज गये।।3।।

चउशतकर तुंग मकर लांछन, दो लाख वर्ष पूर्वायु कही।
शशिकांत देह भी पुष्पदंत! अंतक के अन्तक तुम्हीं सही।।
निश्चय व्यवहार रत्नत्रय से, भूषित शिवकांता वरण किया।
मुझ ''ज्ञानमती'' का भी रत्नत्रय, बस पूर्ण करो मैं शरण लिया।।4।।

नवग्रहशांति स्तोत्र

रचयित्री–आर्यिका चन्दनामती

–शंभु छन्द–

सिद्धों का वंदन इस जग में, आतम सिद्धि का कारण है।
इनकी भक्ति से भक्त करें, दुर्गति का सहज निवारण है।।
सब तीर्थंकर भगवंत एक दिन, सिद्धि प्रिया को पाते हैं।
इसलिए सभी ग्रह की शांति में, वे निमित्त बन जाते हैं।।1।।

नभ में जो सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरू व शुक्र, शनि ग्रह माने।
राहू केतू मिलकर नवग्रह, ज्योतिषी देव के ग्रह माने।।
मानव के जन्म समय से ये, सब जन्मकुण्डली में रहते।
शुभ-अशुभ आदि फल देने में, राशी अनुसार निमित बनते।।2।।

जब ग्रह अनिष्टकारी होवे, तब प्रभु भक्ती रक्षा करती।
जिनसागर सूरि ने बतलाया, नवग्रह में नव प्रभु की भक्ती।।
श्रीपद्मप्रभ भगवान सूर्य ग्रह, के अरिष्ट को शांत करें।
ग्रह सोम का जब होवे प्रकोप, तब भक्त चन्द्रप्रभु याद करें।।3।।

निज मंगल ग्रह की शांति हेतु, प्रभु वासुपूज्य को नमन करो।
बुधग्रह जब देवे कष्ट तुरत, प्रभु मल्लिनाथ अर्चन कर लो।।
महावीर प्रभू गुरु ग्रह से होने, वाले कष्ट मिटाते हैं।
निज गुरुबल तेजस्वी करने हित, वर्धमान को ध्याते हैं।।4।।

श्री पुष्पदंत भगवान शुक्र ग्रह, के शांतिकारक माने।
शनिग्रह अति उग्र हुआ तो भी, मुनिसुव्रत प्रभु उसको हानें।।
ग्रह राहु अगर होवे अरिष्ट, तो नेमिनाथ का मंत्र जपो।
प्रभु पार्श्वनाथ के चरणों में, ग्रह केतु शांति हेतू प्रणमो।।5।।

ये नव तीर्थंकर नवग्रह की, शांति में हेतू माने हैं।
है दुख का मूल असाता ही, पर बाह्य निमित ग्रह माने हैं।।

जिन भक्ति असाता कर्मों को, साता में परिवर्तित करती।
ग्रह से उत्पन्न सभी बाधा, तब ही तो शांत हुआ करती।।6।।

पूजन-अर्चन के साथ-साथ, ग्रहशांति मंत्र का जाप करो।
जितनी संख्या जिस मंत्र की है, उसको कर मन संताप हरो।।
अपने प्रभु के अतिरिक्त कहीं, मिथ्यामत में मत भरमाना।
दुख संकट आने पर भी कभी, जिनधर्म को भूल नहीं जाना।।7।।

नवग्रहशांति की पूजन कर, नवग्रह का कभी विधान करो।
तीर्थंकर प्रभु के गुण गाकर, निज आतम गुण भंडार भरो।।
निज जन्मकुण्डली में स्थित, ग्रह को भी उच्चस्थान करो।
फिर सूर्य-चन्द्र सम शुभ प्रकाश से, जीवन का उत्थान करो।।8।।

बीसवीं सदी की प्रथम बालसति, गणिनी माता ज्ञानमती।
उनकी शिष्या ''आर्यिका चन्दनामति'' ने यह स्तुती रची।।
पच्चिस सौ तीस वीर संवत्, तिथि फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
निजशांति हेतु ग्रहशांति हेतु, प्रभु पद में अर्पित काव्यकृती।।9।।

तीर्थंकर जन्मभूमि वंदना

(मंगलचतुर्विंशतिका)

–गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

-अनुष्टुप् छंद-

अयोध्या मंगलं कुर्या-दनन्ततीर्थकर्तृणाम्।
शाश्वती जन्मभूमिर्या, प्रसिद्धा साधुभिर्नुता।।1।।

ऋषभोऽजिततीर्थेशोऽप्यभिनंदनतीर्थकृत्।
श्रीमान् सुमतिनाथश्चा - नन्तनाथजिनेश्वरः।।2।।

पंचतीर्थकृतां गर्भ - जन्मकल्याणकादिषु।
इन्द्रादिभिः सदा वंद्या वंद्यते वंदयिष्यते।।3।।

संप्रति कालदोषेण शेषास्तीर्थंकराः पृथक्।
संजातास्ता अपिजन्म-भूमयो मंगलं भुवि।।4।।

श्रावस्ती मंगलं कुर्यात्, संभवनाथजन्मभूः।
तनुतान्मे मनःशुद्धिं, भव्यानां भवहारिणी।।5।।

कौशाम्बी मंगलं कुर्यात्, पद्मप्रभस्य जन्मभूः।
जिनसूर्यो मनोऽब्जं मे, प्रफुल्लीकुरुतादपि।।6।।

वाराणसी जगन्मान्या, मंगलं तनुतान्मम।
जन्मभूमिः सुरैः पूज्या, सुपार्श्वपार्श्वनाथयोः।।7।।

चन्द्रपुरी सुरैर्मान्या, मंगलं कुरुतात्सदा।
चन्द्रप्रभजिनेंद्रस्य, जन्मभूर्जन्मपावनी।।8।।

काकंदी मंगलं कुर्यात्, पुष्पदन्तस्य जन्मभूः।
आनंदं तनुताद् भूमौ, सर्वमंगलकारिणी।।9।।

मंगलं कुरुताान्नित्यं, जन्मभूर्भद्रकावती।
शीतलस्य जिनेंद्रस्य, मनो मे शीतलं क्रियात्।।10।।

सिंहपुरी जगन्मान्या, मंगलं कुरुतान्मम।
श्रीश्रेयांसजिनेंद्रस्य, जन्मभूमिः शिवंकरा।।11।।

चंपापुरी जगद्वंद्या, मंगलं तनुताद् ध्रुवं।
वासुपूज्यजिनेंद्रस्य, जन्मभूमिर्नुतामरैः।।12।।

सा कंपिलापुरी नित्यं, मंगलं कुरुतान्मम।
मच्चित्तं विमलीकुर्यात्, विमलेश्वरजन्मभूः।।13।।

रत्नपुरी यतीन्द्राणां, मंगलं कुरुताच्च नः।
सद्धर्मवृद्धये भूयाद्, धर्मनाथस्य जन्मभूः।।14।।

हस्तिनागपुरी नित्यं, मंगलं तनुतान्मम।
शांतिकुंथ्वरतीर्थेशां, जन्मभूमिर्जगन्नुता।।15।।

या मिथिलापुरी शश्वत्, मंगलं कुरुतान्मम।
जन्मभूमिः प्रसिद्धाभूत्, मल्लिनाथनमीशयोः।।16।।

मंगलं संततं कुर्यात्, राजगृही सुजन्मभूः।
मुनिसुव्रतनाथस्य, दद्यान्मे सुव्रतं त्वसौ।।17।।

शौरीपुर्यर्द्धचक्र्याद्यैः, मान्या मे मंगलं क्रियात्।
इन्द्रादिभिः सदा वंद्या, नेमिनाथस्य जन्मभूः।।18।।

या कुण्डलपुरी पूज्या, मंगलं कुरुताद् भुवि।
जन्मभूमिः प्रसिद्धास्ति, महावीरस्य संप्रति।।19।।

राजधानीह सिद्धार्थ-भूपतेः साधुभिर्नुता।
नंद्यावर्तं च प्रासादं, रत्नवृष्ट्या सुमंगलम्।।20।।

चतुर्विंशतितीर्थेशां, षोडश जन्मभूमयः।
वंद्यास्ता मंगलं कुर्युः, घ्नन्तु जन्मपरम्परां।।21।।

दीक्षाज्ञानस्थलं पूज्यं, प्रयागश्चाहिच्छत्रकं।
संततं मंगलं कुर्यात्, पूर्णज्ञानर्द्धये भवेत् ।।22।।

कैलाशचंपापावोर्ज-यन्तसम्मेदशृंगिषु।
निर्वाणभूमयो यास्ताः, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।23।।

पंचकल्याणकैः पूज्या, भूमिसरोवराद्रयः।
तास्तान् ज्ञानमती याचे, दद्युः सिद्धिं च मे ध्रुवम्।।24।।

तीर्थंकर जन्मभूमि तीर्थ वंदना

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

– शेर छन्द–

जय जय जिनेन्द्र जन्मभूमियाँ प्रधान हैं।
जय जय जिनेन्द्र धर्म की महिमा महान है।।
जय जय सुरेन्द्रवंद्य ये धरा पवित्र हैं।
जय जय नरेन्द्र वंद्य ये तीरथ प्रसिद्ध हैं।।1।।

मिश्री से जैसे अन्न में मिठास आती है।
वैसे ही पवित्रात्मा तीरथ बनाती हैं।।
हो गर्भ जन्म दीक्षा व ज्ञान जहाँ पर।
वे तीर्थ कहे जाते हैं आज धरा पर।।2।।

जिनवर जनम से पहले वहाँ इन्द्र आते हैं।
नगरी को सुसज्जित कर उत्सव मनाते हैं।।
सुंदर महल सजाया जाता है वहाँ पर।
जिनवर के पिता-माता रहते हैं वहाँ पर।।3।।

पहली जनमभूमि है नगरि तीर्थ अयोध्या।
शाश्वत जनमभूमी प्रभू की कीर्ति अयोध्या।।
इस युग में किन्तु पाँच जिनेश्वर वहाँ जन्मे।
वृषभाजित अभीनंदन सुमति अनंत वे।।4।।

श्रावस्ती ने संभव जिनेन्द्र को जनम दिया।
कौशाम्बी में श्रीपद्मप्रभू ने जनम लिया।।
वाराणसी सुपार्श्व पार्श्व से पवित्र है।
श्रीचन्द्रपुरी चन्द्रप्रभू से प्रसिद्ध है।।5।।

काकन्दी को सौभाग्य मिला पुष्पदंत का।
भद्दिलपुरी जन्मस्थल शीतल जिनेन्द्र का।।
श्रेयाँसनाथ से पवित्र सारनाथ है।
जिनशास्त्रों में जो सिंहपुरी से विख्यात है।।6।।

श्रीवासुपूज्य जन्मभूमि चम्पापुरी है।
कम्पिल जी विमलनाथ जिनकी जन्मभूमि है।।
तीरथ रतनपुरी है धर्मनाथ की भूमी।
रौनाही से प्रसिद्ध है वह आज भी भूमी।।7।।

श्रीशांति कुंथु अरहनाथ हस्तिनापुर में।
जन्मे जिनेन्द्र तीनों त्रयलोक भी हरषे।।
मिथिलापुरी में मल्लि व नमिनाथ जी जन्मे।
तीर्थेश मुनिसुव्रत जी राजगृही में।।8।।

है जन्मभूमि शौरीपुर नेमिनाथ की।
महावीर से कुण्डलपुरी नगरी सनाथ थी।।
चौबीस जिनवरों की जन्मभूमि को नमूँ।
कर बार-बार वंदना सार्थक जनम करूँ।।9।।

श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली।
कई जन्मभूमियों में नई ज्योति तब जली।।
उन प्रेरणा से जन्मभूमि वन्दना रची।
प्रभु जन्मभूमि तीर्थों की भक्ति मन बसी।।10।।

प्रभु बार-बार मैं जगत में जन्म ना धरूँ।
इक बार जन्मधार बस जीवन सफल करूँ।।
इस भाव से ही जन्मभूमि वन्दना करूँ।
निज भाव तीर्थ प्राप्ति की अभ्यर्थना करूँ।।11।।

यह भक्तिसुमन थाल है गुणमाल का प्रभु जी।
अर्पण करूँ है भावना यात्रा करूँ सभी।।
बस ''चन्दनामती'' की इक आश है यही।
संयम की ही परिपूर्णता जीवन की हो निधी।।12।।

चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों की नामावली

महानुभावों,

अपने नगर के जिनमंदिरों में चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों के नाम निम्नानुसार लिखवाएं एवं इन तीर्थों की यात्रा करके पुण्यलाभ प्राप्त करें।

1. अयोध्या (फैजाबाद-उ.प्र.)	–श्री ऋषभदेव भगवान
	–श्री अजितनाथ भगवान
	–श्री अभिनंदननाथ भगवान
	–श्री सुमतिनाथ भगवान
	–श्री अनंतनाथ भगवान
2. श्रावस्ती (बहराइच-उ.प्र.)	–श्री संभवनाथ भगवान
3. कौशाम्बी (उ.प्र.)	–श्री पद्मप्रभु भगवान
4. वाराणसी (उ.प्र.)	–श्री सुपार्श्वनाथ भगवान
	–श्री पार्श्वनाथ भगवान
5. चन्द्रपुरी (वाराणसी) उ.प्र.	–श्री चन्द्रप्रभु भगवान
6. काकन्दी (देवरिया नि.-गोरखपुर) उ.प्र.	–श्री पुष्पदंतनाथ भगवान
7. भद्रिकापुरी	–श्री शीतलनाथ भगवान
8. सिंहपुरी (सारनाथ) उ.प्र.	–श्री श्रेयांसनाथ भगवान
9. चम्पापुरी (भागलपुर-बिहार)	–श्री वासुपूज्यनाथ भगवान
10. कम्पिलपुरी (फर्रूक्खाबाद-उ.प्र.)	–श्री विमलनाथ भगवान
11. रत्नपुरी (फैजाबाद-उ.प्र.)	–श्री धर्मनाथ भगवान
12. हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.)	–श्री शांतिनाथ भगवान
	–श्री कुन्थुनाथ भगवान
	–श्री अरनाथ भगवान
13. मिथिलापुरी	–श्री मल्लिनाथ भगवान
	–श्री नमिनाथ भगवान
14. राजगृही (नालंदा-बिहार)	–श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान
15. शौरीपुर (बटेश्वर-उ.प्र.)	–श्री नेमिनाथ भगवान
16. कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार)	–श्री महावीर भगवान

–निवेदक –

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी

प्रधान कार्यालय –**जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.**, फोन नं.-01233-280184, 292943

काकन्दी तीर्थ की आरती

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-मिलो न तुम तो.....

पुष्पदंत जिन जन्मभूमि, काकन्दी तीरथ प्यारा, उतारें आरती-2।।
सुर नर वंदित तीर्थ हमारा, काकन्दी जी न्यारा, उतारें आरती।।टेक.।।

चौबीस तीर्थंकर में, पुष्पदंत स्वामी, नवमें जिनवर हैं।।हो.....
काकन्दी नगरी तब से, पावन बनी सुर नर वंदित है।।हो....
इन्द्र, मनुज भी जिस नगरी को, शत शत शीश झुकाएँ, उतारें आरती।।1।।

जयरामा माता और सुग्रीव पितु का शासन था जहाँ। हो.....
जन्में तो उस क्षण पूरा, स्वर्ग ही उतरकर आया था वहाँ।।हो....
चार-चार कल्याणक से पावन नगरी को ध्याएँ, उतारें आरती।।2।।

बीते करोड़ों वर्षों, फिर भी धरा वह पूजी जाती है। हो.....
धूल भी पवित्र उसकी, मस्तक को पावन बनाती है।। हो.....
जैनी संस्कृति की दिग्दर्शक, उस भूमी को ध्यावें, उतारें आरती।।3।।

रोमांच होता है जब, उस क्षण की बातें मन में सोच लो। हो.....
वन्दन करो उस भू को, निज मन में इच्छा इक ही तुम धरो।। हो.....
कब प्रभु जैसा पद हम पाएं, यही भावना भाएँ, उतारें आरती।।4।।

जो भव्य प्राणी ऐसी, पावन धरा को वंदन करते हैं। हो.....
क्रम-क्रम से पावें शक्ती, मानव जनम भी सार्थक करते हैं।। हो.....
आरति कर सब भव्य जीव, भव आरत से छुट जाएं, उतारें आरती।।5।।

प्राचीन इस तीरथ को विकसित किया है सबने मिल करके। हो.....
गणिनीप्रमुख श्री माता, ज्ञानमती जी से शिक्षा ले करके।। हो.....
तभी ''चन्दनामती'' तीर्थ ने, नव स्वरूप है पाया, उतारें आरती।।6।।

पुष्पदन्तनाथ भगवान की आरती

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

ॐ जय पुष्पदन्त स्वामी, प्रभु जय पुष्पदन्त स्वामी।
काकन्दी में जन्मे, त्रिभुवन में नामी।।ॐ जय.।।

फाल्गुन कृष्णा नवमी, गर्भ कल्याण हुआ। स्वामी....
जयरामा सुग्रीव मात-पितु, हर्ष महान हुआ।।ॐ जय.।।1।।

मगशिर शुक्ला एकम, जन्म कल्याणक है। स्वामी.....
तप कल्याणक से भी, यह तिथि पावन है।। ॐ जय.।।2।।

कार्तिक शुक्ला दुतिया, घातिकर्म नाशा। स्वामी.....
पुष्पकवन में केवल-ज्ञानसूर्य भासा।।ॐ जय.।।3।।

भादों शुक्ला अष्टमि, सम्मेदाचल से। स्वामी....
सकल कर्म विरहित हो, सिद्धालय पहुँचे।।ॐ जय.।।4।।

हम सब घृतदीपक ले, आरति को आए। स्वामी....
यही ''चन्दनामती''कहे, भव आरत नश जाए।।ॐ जय.।।5।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज –कान्ची हो कान्ची रे.....

आओ रे आओ रे सब मिल के आओ, प्रभु जी का उत्सव मनाओ रे।
हो.....
गाओ रे गाओ रे सब मिलके गाओ, पुष्पदंतनाथ गुण गाओ रे।।
हो.....।।टेक.।।

नवमें तीर्थेश जो जगत् ईश हैं, पुष्पदंत प्रभु का मस्तकाभिषेक है।
स्वर्ण कलश हाथ में, लेके सबको साथ में,
जिनवर पे कलशा ढुराओ रे.....हो....ओ.....।।आओ रे.।।1।।

नीर क्षीर धार कैसी मनोहारी है, इनसे प्रभु की छवि लगती प्यारी-प्यारी है।
देखो वीतराग छवी, इनकी करो भक्ति सभी,
जय जय से नभ को गुंजाओ रे.....हो....ओ....।।आओ रे.।।2।।

केशर से केशरियानाथ बन गये, ''चंदनामती'' ये तीर्थनाथ बन गये।
होली खेलो संग में, प्रभु के भक्ति रंग में,
रंग गुलाल उड़ाओ रे.....हो.....ओ.....।।आओ रे.।।3।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज –अरे रे मेरी .....

करो रे अभिषेक प्रभू का, पुष्पदंतेश प्रभू का,
जयरामा माता के लाल का।।करो रे.।।
काकंदी जी तीर्थ में प्रभू विराजमान,
यही नगरी है इनका जनमस्थान।
पुष्पदंत प्रभु को है मेरा प्रणाम,
इनका नाम जपने से बनते हैं काम।।करो रे.।।टेक.।।
नवमें तीर्थंकर पुष्पदंतनाथ हैं,
शुक्रग्रह शांतिकारक प्रभु आप हैं।
काकंदी में देखो कैसा आनन्द हो रहा,
प्रभु जी के दर्श करके हर्ष हो रहा।।करो रे.।।1।।

राजधानी दिल्ली से उपहार मिला है,
काकंदी में देखो नया मंदिर बना है।
ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली,
भक्तों के हृदय में ज्योति ज्ञान की जली।।करो रे.।2।।

सभी भक्त स्वस्थ व चिरायु बनेंगे,
अपनी मनोकामनाएं पूरी करेंगे।
रोग शोक अपने सभी नष्ट करेंगे,
''चंदनामती'' वे सुख भण्डार भरेंगे।।करो रे.।।3।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज –जय जय माँ.....

क्षीरोदधि के जल से, मस्तकाभिषेक करो।
श्री पुष्पदंत प्रभु का, मस्तकाभिषेक करो।।टेक.।।

काकंदी नगरी में, यह मंगल अवसर है।
जहाँ नूतन मंदिर में, नवमें तीर्थंकर हैं।।
उन तीर्थंकर पद में, वंदन सिर टेक करो।
क्षीरोदधि के जल से, मस्तकाभिषेक करो।।1।।

गणिनी माँ ज्ञानमती, की सम्प्रेरणा मिली।
प्रभु जन्मभूमि में तब, पावन नवज्योति जली।।
उस तीरथ के पद में, वंदन सिर टेक करो।
क्षीरोदधि के जल से, मस्तकाभिषेक करो।।2।।

प्रभु दर्श करें जो भी, वे स्वस्थ चिरायु रहें।
प्रभु प्रतिमा जग भर को, सुख शांति प्रदान करे।।
सुखकारी प्रभु पद में, वन्दन सिर टेक करो।
क्षीरोदधि के जल से, मस्तकाभिषेक करो।।3।।

ग्रह शुक्र शांतिकारक, हैं पुष्पदंत स्वामी।
''चंदनामती'' इनकी, भक्ती है कल्याणी।।
ग्रह शांति हेतु प्रभु को, वंदन सिर टेक करो।
क्षीरोदधि के जल से, मस्तकाभिषेक करो।।4।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज –माई रे माई.....

पुष्पदंत प्रभु जन्मभूमि में, गूँज उठी शहनाई।
सौ-सौ वर्षों बाद जहाँ, खुशियों की बेला आई।।
जिनवर पुष्पदंत की जय, उनकी जन्मभूमि की जय.।।टेक.।।

काकंदी वह पुण्यभूमि है, पुष्पदंत जहाँ जनमे।
जयरामा सुग्रीव मात-पितु हर्षे थे निज मन में।।
इन्द्रों की टोली स्वर्गों से, काकंदी में आई।
सौ-सौ वर्षों बाद जहाँ, खुशियाँ की बेला आई।।
जिनवर पुष्पदंत की जय, उनकी जन्मभूमि की जय.।।1।।

गणिनी ज्ञानमती माता की, मिली प्रेरणा सबको।
जीर्णोद्धार विकास तीर्थ का, करो कराओ भक्तों।।
इसी भावना के कारण, उत्सव की घड़ियाँ आईं।
सौ-सौ वर्षों बाद जहाँ, खुशियों की बेला आई।।
जिनवर पुष्पदंत जय, उनकी जन्मभूमि की जय.।।2।।

पुष्पदंत प्रभु शुक्र-अरिष्ट, निवारक माने जाते।
भौतिक सम्पति पाने हेतू, भक्त शरण में आते।।
इसीलिए ''चंदनामती'', उन प्रभु की महिमा गाई।
सौ-सौ वर्षों बाद जहाँ, खुशियों की बेला आई।।
जिनवर पुष्पदंत जय, उनकी जन्मभूमि की जय.।।3।।

भजन

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–पंखिड़ा.....

पंखिड़ा तू उड़ के जाना स्वर्गपुरी में।
कहना इन्द्र से कि चलो मध्यलोक में।।पंखिड़ा.....।।टेक.।।

मध्यलोक में श्री जिनवरों के नाथ जन्मे हैं।
उनके माता-पिता और तीनों लोक हरषें हैं।।
पूजा करो, भक्ति करो, वन्दना करो।
भक्ति करके प्रभु की आत्मशक्ति को भरो।।पंखिड़ा.....।।1।।

देखो मध्यलोक में ही सारे तीर्थक्षेत्र हैं।
प्रभु के मोक्ष से पवित्र यहीं सिद्धक्षेत्र हैं।।
पूजा करो, भक्ति करो, वन्दना करो।
भक्ति करके प्रभु की आत्मशक्ति को भरो।।पंखिड़ा.....।।2।।

मध्यलोक में सदा ही साधु-सन्त रहते हैं।
विश्वशांति का सदा ही वे प्रयत्न करते हैं।।
पूजा करो, भक्ति करो, वन्दना करो।
भक्ति करके प्रभु की आत्मशक्ति को भरो।।पंखिड़ा.....।।3।।

स्वर्गपुरि से देव-इन्द्र मध्यलोक आते हैं।
''चंदनामती'' वे जिनवरों के गीत गाते हैं।।
पूजा करो, भक्ति करो, वन्दना करो।
भक्ति करके प्रभु की आत्मशक्ति को भरो।।पंखिड़ा.....।।4।।

भजन

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–सबसे बड़ी मूर्ति का.....

पुष्पदंतनाथ का, नवम तीर्थनाथ का, मस्तकाभिषेक हो रहा है,
प्रभु का जयजयकार हो रहा है।।टेक.।।

तीर्थ बनी काकन्दी नगरी।
पुष्पदन्त प्रभु की जन्म नगरी।।
उनकी हैं विराजमान प्रतिमा।
आज तीर्थ की यही है महिमा।।
उन्हीं तीर्थनाथ का, पुष्पदंतनाथ का, मस्तकाभिषेक हो रहा है,
प्रभु का जय जयकार हो रहा है।।1।।

गणिनीप्रमुख ज्ञानमती जी हैं।
जैन संस्कृति की ये निधी हैं।।
उनकी प्रेरणा से बनी प्रतिमा।
तीर्थ की बढ़ी है इससे गरिमा।।
उन्हीं तीर्थनाथ का, पुष्पदंतनाथ का, मस्तकाभिषेक हो रहा है,
प्रभु का जय जयकार हो रहा है।।2।।

जन्मकल्याणक है उन्हीं प्रा का।
महोत्सव मना लो उन्हीं प्रभु का।।
''चन्दनामती'' जनम सफल हो।
मिले शीघ्र मुझको मुक्ति फल हो।।
उन्हीं तीर्थनाथ का, पुष्पदंतनाथ का, मस्तकाभिषेक हो रहा है,
प्रभु का जय जयकार हो रहा है।।3।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–दमादम मस्त कलन्दर.....

कलश हाथों में लेकर, करूँ अभिषेक प्रभू पर,
तीर्थंकर प्रभु करना कृपा अब मुझ पर, हे प्रभु मुझ पर-2
जयति जय जिनवर जिनवर-2।।टेक.।।

जयरामा सुग्रीव के नन्दन, तीर्थंकर जिन सूर्य को वन्दन।
जन्म लिया तो सुरगण आये हे जिनवर, नवम जिनेश्वर-2।।
कलश.....।।1।।

काकन्दी नगरी के राजा, दीक्षा ले तुम बने मुनिराजा।
फिर मुनिचर्या बतलाई हे जिनवर, नवम जिनेश्वर-2।।
कलश.....।।2।।

पुष्पदन्त प्रभु नाम तुम्हारा, त्यागा तुमने वैभव सारा।।
तप कर केवलज्ञान हो पाया हे जिनवर, नवम जिनेश्वर-2।।
कलश.....।।3।।

सम्मेदगिरि से शिवपद पाया, घाति-अघाती कर्म जलाया।
सिद्धशिला को प्राप्त किया हे जिनवर, नवम जिनेश्वर-2।।
कलश.....।।4।।

गणिनी ज्ञानमती माता की, मिली प्रेरणा प्रभु उत्सव की।
'चन्दनामती' तभी खुशियाँ छाईं हे जिनवर, नवम जिनेश्वर-2।।
कलश.....।।5।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–चाँद मेरे आ जा रे.....

तीर्थ को वन्दन कर लो रे-2,
तीर्थंकर श्री पुष्पदंत प्रभु जन्मभूमि नम लो।।टेक.।।

इस भारत वसुन्धरा पर, तीर्थंकर सदा जनमते।
वे पंचकल्याणक पाकर, जग का कल्याण हैं करते।।
तीर्थ को वन्दन कर लो रे।।1।।

श्री पुष्पदन्त तीर्थंकर, काकन्दी में जन्मे थे।
सुग्रीव पिता जयरामा, माता दोनों हरषे थे।।
तीर्थ को वन्दन कर लो रे।।2।।

बस इसीलिए काकन्दी, को तीर्थ कहा जाता है।
''चन्दनामती'' इससे ही, भवसिन्धु तिरा जाता है।।
तीर्थ को वन्दन कर लो रे।।3।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–फूलों सा चेहरा तेरा.....

इस युग की माँ शारदे, तू धर्म की प्राण है।
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।टेक.।।

महावीर प्रभु के शासन में अब तक,
कोई भी नारी न ऐसी हुई।
साहित्य लेखन करने की शक्ति,
तुझमें न जाने कैसे हुई।।

शास्त्र पुराणों में, भक्ति विधानों में, तेरा प्रथम नाम है विश्व में-2
कलियुग की माँ भारती, पूनो का तू चांद है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।1।।

तीर्थंकरों की जन्मभूमि का,
उत्थान माता तुमने किया।
हस्तिनापुरी में जंबूद्वीप को,
साकार माता तुमने किया।।

तीर्थ अयोध्या की, कीर्ति प्रसारित की, मस्तकाभिषेक आदिनाथ का हुआ-2
तू जग की वागीश्वरी, धरती का सम्मान है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।2।।

गणिनी शिरोमणि तेरी तपस्या,
का लाभ इस वसुधा को मिला।
चारित्र चक्री गुरु के सदृश ही,
''चंदना'' इक पुष्प जग में खिला।

पुष्प महकता है, चाँद चमकता है, ज्ञानमती माता के रूप में-2
युग युग तू जीती रहे, हम सबके अरमान हैं,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।3।।

भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकंदी में भव्यतापूर्वक पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न

-जीवन प्रकाश जैन, प्रबंध सम्पादक

नवमें तीर्थंकर भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकंदी (जिला-देवरिया) उ.प्र. में तीर्थंकर जन्मभूमि विकास की प्रेरणास्रोत पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से दिनाँक 17 जून से 21 जून 2010 तक नूतन जिनमंदिर का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव भारी हर्षोल्लास के साथ सानंद सम्पन्न हुआ। ज्ञातव्य है कि काकंदी तीर्थक्षेत्र का विकास विशाल जिनमंदिर निर्माण के साथ किया गया है। यहाँ पर नवनिर्मित मंदिर जी में 9 फुट उत्तुंग ग्रेनाइट पाषाण वाली भगवान पुष्पदंतनाथ की पद्मासन प्रतिमा विराजमान की गई हैं। तीर्थ पर नूतन कीर्तिस्तंभ का निर्माण तथा एक प्राचीन जिनमंदिर भी स्थित है। इस तीर्थ पर मंदिर एवं मूर्ति निर्माण का पुण्य श्री राजकुमार जैन-श्रीमती आशा जैन 'वीरा बिल्डर्स' परिवार, दिल्ली को प्राप्त हुआ तथा नूतन कीर्तिस्तंभ के निर्माण का सौभाग्य संघपति श्री महावीर प्रसाद जैन-श्रीमती कुसुमलता जैन-दिल्ली को प्राप्त हुआ।

तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास के क्रम में पूज्य माताजी की प्रेरणा से काकंदी तीर्थ पर पूज्य पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज के सान्निध्य में दिनाँक 17 जून से झण्डारोहण, मंगल कलश स्थापना, दीप प्रज्ज्वलन व मण्डल पर भगवान विराजमान होकर गर्भकल्याणक के साथ प्रतिष्ठा महोत्सव का शुभारंभ हुआ। पुनः 18 जून को जन्मकल्याणक महोत्सव, 19 जून को दीक्षाकल्याणक, 20 जून को भगवान का आहार एवं केवलज्ञानकल्याणक व 21 जून को मोक्षकल्याणक, शिखर पर कलशारोहण, अखण्ड ध्वज स्थापन, भगवान का महामस्तकाभिषेक, विश्वशांति महायज्ञ, पूजा अन्त्य विधि आदि के साथ यह पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद सम्पन्न हुआ।

प्रतिष्ठा महोत्सव प्रतिष्ठाचार्य पं. नरेश कुमार जैन शास्त्री, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ, जिसमें सहयोगी प्रतिष्ठाचार्य के रूप में पं. विजय कुमार जैन-जम्बूद्वीप, पं. सतेन्द्र कुमार जैन-तिवरी (म.प्र.) ने मुख्य भूमिका निभाई। समस्त महोत्सव भगवान पुष्पदंतनाथ दिगम्बर जैन

तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा आयोजित किया गया, जिसमें अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन के कुशल नेतृत्व से महोत्सव को भारी सफलता प्राप्त हुई और 21 जून को भगवान पुष्पदंतनाथ के महामस्तकाभिषेक का सीधा प्रसारण आस्था चैनल के माध्यम से प्रातः 7.30 बजे से 10 बजे तक तथा मध्यान्ह 1 बजे से 3 बजे से दुनिया के लगभग 150 देशों में किया गया। इस सीधे प्रसारण से जहाँ जैनधर्म की महती प्रभावना हुई, वहीं जन्मभूमि काकंदी तीर्थक्षेत्र का भी नाम देश-विदेश में गुंजायमान हुआ और तीर्थ की प्रभावना हुई।

विशेषरूप से महोत्सव के मध्य दिनाँक 20 जून को रात्रि 8 बजे प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रमुख पात्र-माता-पिता श्री पुखराज-अनूप बाई पाण्ड्या, सौधर्म इन्द्र श्री महावीर-विमला जैन, धनकुबेर श्री पुष्पदंत जैन, ईशान इन्द्र श्री पुष्कर-इन्दू जैन, सानत्कुमार इन्द्र श्री शलभ-श्वेता जैन, माहेन्द्र इन्द्र श्री ज्ञानेन्द्र-संध्या जैन व समस्त इन्द्र-इन्द्राणीगण तथा प्रमुख श्रेष्ठियों में श्री राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स', दिल्ली, श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति-दिल्ली, श्री कमलचंद जैन, खारबावली-दिल्ली, श्री ज्ञानचंद जैन, आरा (बिहार) तथा श्री अनिल कुमार जैन, प्रीतविहार-दिल्ली का समिति की ओर से सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसमें सभी को तिलक, माल्यार्पण के साथ प्रशस्ति पत्र, शॉल, श्रीफल आदि भेंट किये गये। इस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में देवरिया के जिलाधिकारी माननीय श्री पवन कुमार जी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में एस.एस.पी. माननीय श्री एम.डी. कर्णधार पधारे। समिति द्वारा अतिथियों को भी सम्मानित किया गया।

सम्पूर्ण महोत्सव में हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लेकर पुण्य अर्जित किया। जैन श्रद्धालुओं के साथ ग्रामवासी श्रद्धालुओं ने भी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आदि का भरपूर आनंद उठाया। महोत्सव में उमरगा (महा.) के राजेन्द्र जैन ग्रुप के कलाकारों द्वारा प्रतिदिन विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये तथा संगीतकार के रूप में हरीश कुमार एण्ड पार्टी-भरतपुर (राज.) द्वारा पूजा-विधान आदि में अपनी स्वर लहरियों से सभी भक्तों का मन मोहा। व्यवस्थाओं की दृष्टि से समिति द्वारा समस्त यात्रियों के आवास हेतु विशेष 75 अस्थाई डीलक्स फ्लैट्स का निर्माण कराया गया।

सभी तीर्थयात्रियों को आवास संयोजक के रूप में श्री शुभचंद्र जैन-टिकैतनगर ने अपनी टीम के साथ उचित सुविधाएँ प्रदान करने का कुशल

प्रयास किया। श्री सपन जैन-इलाहाबाद एवं उनके सहयोगियों ने महामस्तकाभिषेक में विशेष सहयोग प्रदान किया। इसके साथ ही श्री अनिल कुमार जैन, प्रीतविहार-दिल्ली, ब्र. राजेश जैन-जम्बूद्वीप, श्री अम्यु कुमार जैन-मेरठ, श्री चिरंजीलाल कासलीवाल-पटना आदि महानुभावों ने भी विभिन्न व्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करके महोत्सव को सफल बनाया। महोत्सव की सफलता में गोरखपुर दिगम्बर जैन समाज के समस्त वरिष्ठ पदाधिकारियों-अध्यक्ष श्री पुष्पदंत जैन, मंत्री-श्री पुष्कर जैन, उपाध्यक्ष-श्री पुखराज पाण्ड्या, उपाध्यक्ष-श्री ज्ञानेन्द्र जैन, प्रचार मंत्री-डॉ. अभय जैन, श्री महावीर जैन, श्री प्रदीप जैन (एस.बी.आई वाले) तथा अभिनंदन जैन, रिशू जैन, दिनेश जैन, गौरव जैन आदि कार्यकर्ताओं का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण महोत्सव में पधारे समस्त अतिथियों एवं यात्रियों के प्रीतिभोज की व्यवस्था सेठी फ्लोर मिल प्राइवेट लिमिटेड, चरगांवा-गोरखपुर (उ.प्र.) द्वारा की गई।